

श्रीरामपुर कॉलेज SERAMPORE COLLEGE

20
पे. P.



भारत

INDIA

स्थापित-ESTD.-1818

भारत INDIA

श्रीरामपुर कॉलेज

समारक डाक-टिकट

SERAMPORE COLLEGE

COMMEMORATION STAMP

7-6-1969

श्रीरामपुर कॉलेज की स्थापना 1818 में डाक्टर विलियम कैरे और उनके सहयोगियों—जोशुआ मार्शमैन तथा विलियम बार्ड—द्वारा रायल डैनिश चार्टर के अधीन की गई थी, जिसने कॉलेज को धर्म-दर्शन में उपाधियां प्रदान करने का अधिकार दिया था । ये प्रवर्तक धर्म-प्रचारक 1792 में स्थापित ब्रिटिश बैपटिस्ट मिशनरी सोसाइटी के सदस्य थे । श्री कैरे 1793 में भारत आए, किन्तु ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी के विरोध के कारण श्रीरामपुर की डैनिश बस्ती द्वारा संरक्षण और शरण प्राप्त होने तक उन्हें कई वर्षों तक माल्दा में नील के काश्तकार के रूप में अपना धर्म-प्रचार का कार्य करते रहने को विवश होना पड़ा ।

इन धर्म-प्रचारकों का उद्देश्य इस देश में पूर्वी साहित्य तथा पश्चिमी विज्ञान का परिचय कराना था । कला तथा विज्ञान, कृषि, बागबानी, पुरातत्त्व, पत्रकारिता, समाज-कल्याण आदि क्षेत्रों में उनका योगदान महत्वपूर्ण रहा है । वस्तुतः शिक्षा के क्षेत्र में

उनके इस कार्यकाल को बंगाल में इतिहासकारों ने उन्नीसवीं शताब्दी का पुनर्जागरण कहकर सम्बोधित किया है ।

श्रीरामपुर कॉलेज ही एक ऐसा कॉलेज था, और शायद आज भी वही अकेला ऐसा कॉलेज है जो एक ही प्रयत्न के अंतर्गत धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष शिक्षा प्रदान करता है । इसके संविधान में स्पष्ट रूप से यह व्यवस्था है कि "इस कॉलेज में प्रवेश के लिए कोई भी जाति, वर्ण या देश किसी भी व्यक्ति पर प्रतिबंध नहीं लगाएगा ।" इसका रूप प्राच्य और पाश्चात्य दोनों ही था, जो प्रादेशिक भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाये रखने का प्रयत्न करता रहा ।

श्रीरामपुर कॉलेज ने 1918 में अपनी स्थापना शताब्दी तथा 1927 में चार्टर प्राप्त करने की शताब्दी मनाई थी । अपने प्रारंभ से ही यह कॉलेज कलकत्ता विश्वविद्यालय से सम्बद्ध रहा है । एक पूरे दर्जे का उपाधि-प्रदायी विश्वविद्यालय के रूप में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त

करने की यह प्रतीक्षा कर रहा है। उच्चतर शिक्षा के क्षेत्र में 150 वर्षों की सफल सेवा के पश्चात् यह कॉलेज इस वर्ष अपने संस्थापन की 'तेरजुबिली' अर्थात् एक सौ पचासवों जयंती मनाने जा रहा है। इस महान् अवसर के उपलक्ष्य में डाक तार विभाग इस कॉलेज के नाम पर एक विशेष डाक टिकट जारी करके प्रसन्नता का अनुभव करता है।

Serampore College was established in 1818 by Dr. William Carey and his associates, Joshua Marshman and William Ward, under the Royal Danish Charter, which empowered the College to confer degrees in Theology. These pioneer missionaries were members of the British Baptist Missionary Society, which was formed in 1792. Carey came out to India in 1793, but due to the hostility of the British East India Company, was obliged to carry on his missionary work for several years as an indigo planter in Malda till he was given protection and shelter in the Danish Settlement at Serampore.

The objective of the missionaries was to introduce Eastern literature and Western science to this country. Their contribution in the fields of arts and science, agriculture, horticulture, archaeology, journalism, social welfare, etc., had been significant. Indeed this period of their work in the field of education was hailed by the historians as the 19th century renaissance in Bengal.

Serampore College was and, perhaps, still today is the only college which imparts religious and secular education

under one management. It is clearly laid down in its constitution that "no caste, colour or country shall bar any man from admission to the College." It was both Oriental and Occidental in character, trying to maintain the regional language as the medium of instruction.

Serampore College celebrated the centenary of its founding in 1918 and the centenary of receiving the Charter in 1927. It was affiliated to the University of Calcutta from its very inception. It awaits the recognition of the University Grants Commission as a degree-giving university of full status. After 150 years of fruitful service in the field of higher education, the College celebrates this year its 'Terjubilee', i.e., the 150th Anniversary of its founding. In commemoration of this great occasion, the Posts and Telegraphs Department is happy to bring out a special postage stamp in the name of the College.



तकनीकी आँकड़े

TECHNICAL DATA

जारी करने की तारीख	...	7-6-1969
Date of Issue	...	7-6-1969
मूल्य वर्ग	...	20 पै०
Denomination	...	20 P.
कुल आकार	...	3.34 x 2.46 सें०मी०
Overall Size	...	3.34 x 2.46 cms
मुद्रण आकार	...	2.99 x 2.1 सें०मी०
Printing Size	...	2.99 x 2.1 cms
प्रति शीट संख्या	...	54
Number per issue Sheet	...	54
रंग	...	हल्का कथई
Colour	...	Plum
छिद्रण	...	14 x 13½
Perforation	...	14 x 13½
जलचिह्न	...	बिना जलचिह्न वाले
Watermark	...	कागज पर मुद्रित
मुद्रण प्रक्रिया	...	फोटोग्रेव्योर
Printing Process	...	Photogravure
मुद्रित टिकटों की संख्या	...	30,00,000
Number Printed	...	30,00,000
डिजाइन और मुद्रण	...	भारत प्रतिभूति मुद्रणालय
Designed and Printed at	...	India Security Press

डिजाइन का विवरण

यह डाक टिकट अनुप्रस्थ आकार का है तथा श्रीरामपुर कालेज भवन के सामने और बाईं ओर के दृश्य को चित्रित करता है।

Description of Design

The design of the stamp is horizontal and depicts the building of the "Serampore College" showing front and left side view.

बिक्री की शर्तें

यदि विदेशों से नये डाक-टिकट व प्रथम दिवस आवरण भेजने के मांगपत्र डाक-तार विभाग के पास भेजे जाएं तो उन्हें भारतीय डाक-टिकट संकलन ब्यूरो, बड़ा डाकघर, बम्बई के पते पर भेजा जाना चाहिए और उनके साथ भारत में भुनाया जा सकने वाला बैंक ड्राफ्ट या रेखांकित चेक भी भेजा जाना चाहिए।

TERMS OF SALE

Overseas orders, if placed with the P. & T. Department, for the supply of the new stamps and First Day Covers should be addressed to the *Indian Philatelic Bureau, G.P.O., Bombay* and be accompanied by a Bank draft or crossed cheque encashable in India.



भारतीय डाक-तार विभाग
INDIAN POSTS & TELEGRAPHS

Price 10 पैसे
मूल्य 10 P.

Designed and produced by the Directorate of Advertising & Visual Publicity, Ministry of I. & B., Govt. of India, New Delhi for the Indian Posts & Telegraphs Department and printed at the National Printing Works, Delhi.

No. 9/६/69-PIV-Bilingual 40,000 May 1969